दृष्टि The Vision

हिन्दी साहित्य

HINDI LITERATURE

DTVF/17–HL-**HL5**

निर्धारित समयः तीन घंटे ***Time allowed: Three Hours***	*अधिकतम अंकः 250* ***Maximum Marks: 250***

नाम (Name): Anil

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? | हाँ | | नहीं | |

मोबाइल नं. (Mobile No.): ____________

ई-मेल पता (E-mail address): ____________

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): ____________

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2017] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2017]: | | | | | | | |

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature): Anil

प्रश्न-पत्र के लिये विशिष्ट अनुदेश

कृपया प्रश्नों के उत्तर देने से पूर्व निम्नलिखित प्रत्येक अनुदेश को ध्यानपूर्वक पढ़ेंः

इसमें आठ प्रश्न हैं जो दो खण्डों में विभाजित हैं।

*परीक्षार्थी को कुल **पाँच** प्रश्नों के उत्तर देने हैं।*

*प्रश्न संख्या 1 और 5 अनिवार्य हैं तथा बाकी में से प्रत्येक खण्ड से कम-से-कम एक प्रश्न चुनकर किन्हीं **तीन** प्रश्नों के उत्तर दीजिये।*

प्रत्येक प्रश्न/भाग के अंक उसके सामने दिये गए हैं।

उत्तर हिन्दी (देवनागरी लिपि) में ही लिखे जाएंगे।

प्रश्नों में शब्द सीमा, जहाँ विनिर्दिष्ट है, का अनुसरण किया जाना चाहिये।

प्रश्नों के उत्तरों की गणना क्रमानुसार की जाएगी। यदि काटा नहीं हो, तो प्रश्न के उत्तर की गणना की जाएगी चाहे वह उत्तर अंशतः दिया गया हो। प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़ा हुआ पृष्ठ या उसके अंश को स्पष्ट रूप से काटा जाना चाहिये।

अन्यथा प्रभावित रहे

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): 134 टिप्पणी (Remarks): सतत अध्ययन अपेक्षित

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

SECTION 'A'

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

1. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिए: $10 \times 5 = 50$

(क) यूनीकोड और हिन्दी

यूनीकोड के एक फॉन्ट है, जिसके माध्यम से हिंदी की कंप्यूटर पर टाईपिंग की जा सकती है।

बस्तुतः यूनीकोड के आने से पहले हिंदी को कंप्यूटर पर टाइप करना बेहद जटिल था। एक ऐसा माना जाता था कि हिंदी की कंप्यूटर पर टाईपिंग संभव नहीं है।

किंतु यूनीकोड के आने से पहले 128 चिन्हों की ही टाईपिंग हो सकती थी। किंतु यूनीकोड के आने के पश्चात कीबोर्ड पर चिन्हों की संख्या में वृद्धि हुई। इससे देवनागरी लिपि के सभी

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

चिन्ह शामिल हो गए। अतः टाइपिंग को आसान बनाया गया।

यूनीकोड ने हिंदी टाइपिंग को आसान बनाकर हिंदी का विकास निर्धारित किया है। ~~और~~ ~~अब~~ वर्तमान में यदि हिंदी कंप्यूटर भाषा के रूप में मान्य है तो उसमें यूनीकोड का महत्वपूर्ण योगदान है।

अच्छा प्रयास और बेहतर बनाएँ मॉडल उत्तर देखें

5/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) हिंदी में वैज्ञानिक लेखन में जयन्त विष्णु नार्लीकर का योगदान

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

वैज्ञानिक लेखन में जयंत विष्णु नार्लीकर का महत्वपूर्ण योगदान है। नार्लीकर विदेश में खगोलशास्त्र के वैज्ञानिक थे। उन्होंने ब्रह्माण्ड के 'स्थिर अवस्था के सिद्धांत' का प्रतिपादन किया।

1970 के दशक में भारत आने के पश्चात उन्होंने भारत में वैज्ञानिक लेखन पर बल दिया। उन्होंने हिंदी में सरल एवं सरज रूप में अनेक पुस्तकों की रचना की (जैसे- 'तारों की जीवन गाथा', 'ब्रह्माण्ड की यात्रा', धूमकेतु, इत्यादि।

उन्होंने आसान एवं सरल भाषा में ब्रह्माण्ड के रहस्यों का उद्घाटन किया।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

उन्होंने भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान इत्यादि से संबंधित ~~अनेक~~ हिंदी में अनेक पुस्तकों की रचना की।

जयंत विष्णु नार्लीकर के हिंदी वैज्ञानिक लेखन में ~~अप्रतिम~~ अप्रतिम योगदान को नकारा नहीं जा सकता है। उनका योगदान अद्वितीय है।

अच्छा

5½/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) देवनागरी लिपि के कंप्यूटरीकरण के आरंभिक प्रयत्न

देवनागरी लिपि के कंप्यूटरीकरण आरंभिक प्रयास 70 के दशक में देखने को मिलते हैं। मिनीसोटा विश्वविद्यालय ने सर्वप्रथम कंप्यूटर पर देवनागरी लिपि का मुद्रण किया।

इसके पश्चात भारत में 'बराहा फॉन्ट' का विकास हुआ। टाटा रिसर्च और फंडामेंटल रिसर्च इंस्टीट्यूट ने भी देवनागरी लिपि के कंप्यूटरीकरण के लिए प्रयास किए। विश्व हिंदी सम्मेलन 1983 में एक नया मोड़ आया, जब 'सिद्धार्थ' नामक कंप्यूटर प्रस्तुत किया गया, जिसमें दो भाषाओं का एक साथ मुद्रण संभव था।

इसके अतिरिक्त डॉ. आदित्य ने भी एक ऐसा सॉफ्टवेयर बनाया

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

जिसके माध्यम से कंप्यूटर पर मुद्रण आसान हुआ।

सबसे महत्वपूर्ण प्रयास C-DAC नामक संस्था ने किया। इसने GIST नामक सॉफ्टवेयर का विकास किया, जिसकी सहायता से भारत एवं आठवीं सूची की अन्य 10 भाषाओं पर मुद्रण संभव था।

वर्तमान में गूगल, भारत की संस्था IECL निरंतर हिंदी के कंप्यूटरीकरण के लिए प्रयत्नशील है।

बहुत अच्छा

6/10

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) विकारी और अविकारी पद

विकारी पद से तात्पर्य ऐसे पदों से होता है, जो लिंग, वचन, काल, भाव, वाच्य, पुरुष में परिवर्तन होने पर परिवर्तित हो जाते हैं। विकारी पद के अंतर्गत संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, विशेषण को सम्मिलित किया जाता है।

संज्ञा - किसी वस्तु, व्यक्ति या जात के नाम को संज्ञा कहते हैं।
जैसे - राम, मोहन, कानपुर

सर्वनाम - ऐसे पद, जो संज्ञा के स्थानापन्न प्रयोग होते हैं।
जैसे - वह, तुम, वे

विशेषण - जो किसी की विशेषता बताए।
जैसे - काला, गोरा, पतला

क्रिया - जिसके माध्यम से क्रिया करना ज्ञात हो।
जैसे - जाना, खाना

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

अविकारी पद ऐसे पद होते हैं, जो किसी भी स्थिति में परिवर्तित नहीं होते हैं। अविकारी पदों में - योजक, विस्मयादिबोधक, क्रिया विशेषण, संबंधबोधक को शामिल किया जाता है।

योजक - तथा, और

विस्मयादिबोधक - हे, हा

क्रिया विशेषण - राम पैदल घर जा रहा है।

संबंधबोधक - राम का भाई।

अच्छा

5½/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

दृष्टि The Vision

Copyright – Drishti The Vision Foundation

(ङ) मानक हिन्दी की वाक्य-संरचना

मानक हिंदी में वाक्य संरचना व्याकरणसम्मत है। वाक्य में कर्ता, क्रिया, कर्म विद्यमान होता है।

हिंदी में वाक्य में कर्ता और क्रिया का होना आवश्यक है, जबकि कर्म हो भी सकता है नहीं भी।
जैसे - वह जा रहा है।
- वह घर जा रहा है।

हिंदी में वाक्य के तीन प्रकार के माने गए हैं —
सरल वाक्य → जिसमें कर्ता, क्रिया, कर्म होता है।
जैसे - राम किताब पढ़ रहा है।
संयुक्त वाक्य ⇒ इस वाक्य में एक मुख्य वाक्य होता है, जबकि दूसरा उसका ~~से~~ ~~जोड़~~ जुड़ा रहता

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright - Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

है।
जैसे - राम स्कूल जा रहा था, किंतु वह सोहन के साथ खेलने चला गया।

मिश्रित वाक्य ⇒ इसमें कई वाक्य मिले रहते हैं। कोई भी मुख्य वाक्य नहीं होता है।
जैसे - सीता अपनी सखी के साथ बाग में घूम रही थी, तभी वहाँ बानर आ गया और उनकी ~~सखी~~ सखी उन्हें छोड़कर भाग गई।

अच्छा प्रयास
और गहराई लाएँ

5½/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) देवनागरी लिपि के दोषों पर प्रकाश डालिये। 20

देवनागरी लिपि वैज्ञानिक भाषा है, किंतु उसमें कुछ कमियाँ भी हैं, जो कि निम्नलिखित हैं —

- देवनागरी वर्णमाला को सीखना अत्यंत कठिन है।
- देवनागरी लिपि में वर्णों की संख्या अधिक है। अतः इसे याद करना कठिन है।
- देवनागरी में मात्राओं के प्रयोग का कोई निश्चित नियम नहीं है। कभी मात्राएँ ऊपर लगती हैं, तो कभी नीचे। दाएँ एवं बाएँ भी मात्राओं का प्रयोग होता है। इससे देवनागरी लिपि के प्रयोग में कठिनता होती है।
- शिरोरेखा के प्रयोग के कारण समय अधिक नष्ट होता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

- कुछ वर्ण जैसे - ॠ, ष इत्यादि अब प्रचलन में नहीं है, किंतु इनको प्रयोग अभी मान्यता प्राप्त है।
- कुछ वर्णों में भेद करना कठिन है। जैसे - ख > रव
- कुछ वर्णों का द्विरूप प्रचलन में है। जैसे -
  - झ - झ
  - म - भ
  - ध - घ
- कुछ ध्वनियों में अंतर करना बेहद कठिन है। जैसे - स > श
- देवनागरी लिपि की कंप्यूटर पर टाइपिंग कठिन है।
- संयुक्त व्यंजन के संबंध में कोई स्पष्ट नियम नहीं है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

- अनुस्वार के प्रयोग के लिए कोई स्पष्ट नियम ~~नियम~~ नहीं है। कहीं-कहीं अनावश्यक अनुस्वार का प्रयोग मिलता है। जैसे- सम्बंध - संबंध

- क्ष, त्र, ज्ञ जैसे संयुक्ताक्षरों की कोई आवश्यकता नहीं है।

- अंकों के मानकीकरण की समस्या विद्यमान है। वर्तमान में अंक के दो चिन्ह विद्यमान है।

- हाइफन, अर्द्धविराम, विराम के संबंध में निश्चित नियम नहीं है।

- हिंदी में मात्राओं को याद रखना भी चुनौतीपूर्ण कार्य है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

या इस स्थान में प्रश्न या के अतिरिक्त कुछ लिखें।

ease do not write ything except the estion number in s space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

- वर्तमान तक ~~अनेक~~ हिंदी के अनेक शब्दों के दो नाम प्रचलित है। जैसे - लेक्चरर के लिए प्राख्याता, व्याख्याता।

उपरोक्त कमियों के बावजूद भी ~~हिंदी~~ देवनागरी लिपि एक वैज्ञानिक लिपि है और ~~इस~~ लिपि को मानकीकृत रूप प्रदान करने के लिए निरंतर प्रयत्न हो रहे है।

बहुत अच्छा

12/20

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

दृष्टि The Vision

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) हिन्दी की लिंग-व्यवस्था पर प्रकाश डालिये। 15

हिंदी की लिंग व्यवस्था का ~~विकास~~ कोई वैज्ञानिक आधार नहीं है। किंतु फिर भी आम प्रचलन के पश्चात कुछ नियम निश्चित किए गए हैं, जिनके आधार पर हिंदी की लिंग व्यवस्था का वर्णन संभव है। हिंदी में संस्कृत के तीन लिंग के स्थान पर दो लिंग स्वीकार किए हैं।

हिंदी में इन नौ प्रत्ययों को लगाकर हिंदी ~~की~~ में लिंग परिवर्तन संभव है जैसे -

नी → शेर - शेरनी
इ → रीत - रीति
ई → गोला - गोली
आनी → जेठ - जेठानी
इन → ग्वाला - ग्वालिन
आइन → ठाकुर - ठकुराइन

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

Please do not write anything except the question number in this space)

इसके कुछ प्रत्ययों के आधार पर लिंग निर्धारण संभव है जैसे -

अ - राम (पुल्लिंग)

इ - रीति (स्त्रीलिंग)

ई - सखी (स्त्रीलिंग)

आइन - सहुआइन (स्त्रीलिंग)

इसके अतिरिक्त लिंग व्यवस्था की कुछ अन्य विशेषताएं भी है जैसे -

- कुछ शब्द हमेशा पुल्लिंग के रूप में ही स्वीकार किए जाते हैं। जैसे - दही, आंसू इत्यादि।

- हिंदी में लिंग परिवर्तन के साथ ही क्रिया में भी परिवर्तन हो जाता है। जबकि संस्कृत एवं अंग्रेजी में ऐसा नहीं है। उदाहरण -

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

राम ~~वह~~ जाता है।
सीता जाती है। } हिंदी

सीतः गच्छति
रामः गच्छति] → संस्कृत

Ram goes
Rita ~~Re~~ goes

→ आकारान्त विशेषण भी लिंग परिवर्तन के साथ परिवर्तित होते हैं। जैसे -
- काला लड़का
- काली लड़की।

→ कुछ ~~श~~ शब्द हमेशा स्त्रीलिंग के रूप में ही प्रयोग होते हैं। जैसे - अग्नि, आत्मा इत्यादि।

बहुत अच्छा

9/15

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) मानक हिंदी के विकास में श्री किशोरीदास वाजपेयी के योगदान पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कामताप्रसाद गुरु के पश्चात हिंदी के मानक रूप के विकास में किशोरीदास वाजपेयी का महत्वपूर्ण योगदान है। उन्होंने 'हिंदी शब्दानुशासन' की रचना की।

वस्तुतः ~~कि~~ किशोरदास वाजपेयी को हिंदी के मानकीकरण हेतु प्रयास इसलिए करने पड़े क्योंकि 1918 में कामताप्रसाद गुरु द्वारा रचित 'हिंदी व्याकरण' को एक लंबा अंतराल हो गया था और उसमें सुधार आवश्यक था। तो साथ ही 50 के दशक तक आते-आते हिंदी में व्यापक परिवर्तन हो गया था। अतः उन्होंने नवीन ग्रंथ की रचना की। इनके ग्रंथ की महत्वपूर्ण विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

- हिंदी के विकास का बिंदु उन्होंने संस्कृत के स्थान पर प्राकृत को स्वीकार कर दिया।

- उन्होंने हिंदी एवं आर्य भाषाओं से उत्पन्न अन्य बोलियों में एक सामंजस्य स्थापित किया।

- कामता किशोरीदास वाजपेयी ने संज्ञाओं, सर्वनामों, अपत्ययों की नई परिभाषाओं का प्रतिपादन किया। उन्होंने इस संबंध में कामताप्रसाद गुरु के मत का खण्डन किया।

अतः हम कह सकते हैं कि मानक हिंदी में कामताप्रसाद गुरु के पश्चात यदि किसी ने सर्वाधिक महत्वपूर्ण किया है, तो वह है-

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

किशोरीदास वाजपेयी।

अन्यथा

$8\frac{1}{2}$ / 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

3. (क) प्रयोजनमूलक भाषा के रूप में हिन्दी की वर्तमान स्थिति पर विचार कीजिये। 20

वर्तमान 21 वीं ~~सदी~~ में हिंदी के प्रयोग का क्षेत्र अत्यंत विस्तृत हो गया है। भारत में हिंदी सामान्यतः प्रत्येक क्षेत्र में प्रयोग हो रही है।

वर्तमान हिंदी में अनेक साहित्यिक रचनाओं का सृजन किया जा रहा है। चाहे वह गद्य हो या पद्य। कहानी, उपन्यास, नाटक सभी में हिंदी लेखन की प्रभावी भूमिका है।

हिंदी का प्रयोग शासन एवं प्रशासन में भी हो रहा है। प्रशासन, आदेश पत्राचार, संवाद इत्यादि में हिंदी का प्रयोग कर रहा है।

~~औद्यो~~ वर्तमान बाजार व्यवस्था में हिंदी के प्रयोग

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

एवं प्रसार में वृद्धि हुई। कंपनियाँ अपने उत्पादों को बेचना चाहती हैं और इसलिए वे प्रचार का सहारा ले रही है और इसमें हिंदी का महत्वपूर्ण योगदान है।

वर्तमान में विज्ञान एवं तकनीकी के दौर में भी हिंदी का प्रयोग हो रहा है। इंटरनेट पर अनेक ब्लॉग एवं साइट हिंदी में उपलब्ध है। उदाहरण के लिए हंस पत्रिका, 'हंसमंथिली डॉट कॉम' पर उपलब्ध है।

चिकित्सा के क्षेत्र में भी हिंदी का उपयोग हो रहा है। चिकित्सा विज्ञान से संबंधित अनेक पुस्तकों की रचना, हिंदी में हुई है। जिससे हिंदी का प्रसार हो रहा है।

~~अ~~ अभियांत्रिकी में भी हिंदी का प्रयोग

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

हो रहा है। हिंदी में अभियांत्रिकी विषय से संबंधित अनेक पुस्तकों की रचना सरल एवं सहज भाषा में की गई, तो साथ ही अनेक प्रख्यात इन विषयों को हिंदी में आसानी से समझा रहे हैं।

भारत में सर्वमान्य रूप से 'हिंदी' को संपर्क भाषा के रूप में स्वीकार किया गया है। भारत में अधिकांश क्षेत्रों में इसका प्रयोग हो रहा है।

भारत में सूचना, संचार क्रांति ने हिंदी को व्यापक रूप से प्रचारित किया है। हिंदी फिल्मों का आज सुदूर दक्षिण एवं अन्य देशों में भी प्रसारण हो रहा है। तो साथ ही मोबाइल में अब हिंदी में कीपैड उपलब्ध

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
Please do not write anything except the question number in this space)

है।

अतः कहा जा सकता है कि हिंदी के प्रयोग का क्षेत्र अत्यंत व्यापक है। यह मानव जीवन के संबंधित प्रत्येक क्षेत्र में प्रयोग हो रही है।

11/20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

(ख) मानक हिन्दी की वचन-संरचना पर प्रकाश डालिये। 15

हिंदी की वचन व्यवस्था का विकास संस्कृत से हुआ है। संस्कृत में तीन वचन- एकवचन, द्विवचन एवं बहुवचन को स्वीकार किया गया था, किंतु हिंदी में केवल दो वचन स्वीकार किए गए हैं- एकवचन तथा बहुवचन

हिंदी में वचन संरचना की कोई वैज्ञानिक पद्धति नहीं है, बल्कि यह लोक-प्रचलन के साथ विकसित हुई है। इसकी निम्नलिखित ~~विशेषताएँ~~ हैं-

पुल्लिंग में वचन व्यवस्था →

→ पुल्लिंग में आकारान्त एकवचन को बहुवचन में परिवर्तित करने के लिए ऐकारान्त कर दिया जाता है।

जैसे - लड़का - लड़के

~~लड़का~~ ~~लड़के~~

→ इसके अतिरिक्त अन्य सभी

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

एकवचन, ~~सर्व~~ सर्वनाम एवं क्रिया परिवर्तन के माध्यम से बहुवचन में परिवर्तित हो जाते हैं।
जैसे - वह जा रहा है (एकवचन)
वे जा रहे हैं (बहुवचन)

स्त्रीलिंग में वचन व्यवस्था

→ स्त्रीलिंग ईकारांत एकवचन बहुवचन बनने के क्रम में 'इयाँ' हो जाता है।
जैसे - लड़की - लड़कियाँ

→ स्त्रीलिंग में अकारांत, बहुवचन बनने के क्रम में एकारांत हो जाता है। जैसे -
बहिन - बहिनें

इसके अतिरिक्त भी हिंदी की वचन व्यवस्था में अन्य विशेषताएँ हैं।

→ हिंदी में कुछ शब्द हमेशा बहुवचन के रूप में प्रयोग होते हैं। जैसे - ~~प्राण~~, ~~[illegible]~~ आंसू, दर्शन ~~इत्यादि~~

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

→ बचन परिवर्तित होने पर क्रिया में परिवर्तन होता है।
जैसे - वह खा रहा है।
वे खा रहे हैं।

→ कुछ शब्द हमेशा ~~एकव~~ एकवचन के रूप में प्रयोग होते हैं -
जैसे - प्रजा, भीड़ इत्यादि।

बहुत अच्छा

9/15

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) हिन्दी में वैज्ञानिक लेखन में गुणाकर मुले का अवदान बताइए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

गुणाकर मुले का हिंदी में वैज्ञानिक लेखन में महत्वपूर्ण योगदान है। उन्होंने हिंदी में व्याप्त विज्ञान एवं तकनीकी ~~संबंधी~~ पुस्तकों के अभाव संबंधी समस्या का समाधान प्रस्तुत किया।

गुणाकर मुले ने जीव विज्ञान, वनस्पति विज्ञान, भौतिकी, रसायन विज्ञान, खगोलशास्त्र, जलवायु विज्ञान इत्यादि विषयों पर लिखा। मुले के लेखन की सर्वाधिक मुख्य विशेषता यह है कि उन्होंने विज्ञान के ~~मूल~~ गूढ रहस्यों को अत्यंत सरल, सहज भाषा में प्रस्तुत किया। उनके प्रमुख रचनाएँ निम्नलिखित हैं- 'कंप्यूटर क्या है?', 'स्थिति सिद्धांत क्या है', 'कैसी होगी

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

21 वीं सदी', 'भारत में विज्ञान की विकास यात्रा', 'केपलर' तथा 'संसार के महान गणितज्ञ' इत्यादि।

इन्होंने 'कंप्यूटर क्या है' पुस्तक में कंप्यूटर की कार्यप्रणाली का वर्णन किया है। अनेक सॉफ्टवेयरों के संबंध में चर्चा की है। इसी प्रकार उन्होंने 'कैसी होगी 21 वीं सदी' में सूचना, संचार प्रौद्योगिकी, उसके कारण उत्पन्न होने वाली समस्याओं, जलवायु परिवर्तन इत्यादि का व्यापक वर्णन किया है। इन्होंने 'स्थिति सिद्धांत क्या है' में आइंस्टीन के स्थिति से संबंधित सिद्धांत को अत्यंत सरल भाषा में एवं बेहद आसान रूप में प्रस्तुत

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

किया है।

अतः स्पष्ट है कि गुणाकर मुले का हिंदी में वैज्ञानिक लेखन में महत्त्वपूर्ण योगदान है।

अच्छा

8 1/2 / 15

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

SECTION 'B'

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

5. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिए: 10 × 5 = 50

(क) प्रपद्यवाद

प्रपद्यवाद, प्रयोगवाद के विरुद्ध प्रारंभ हुआ। ~~इसमें~~ प्रयोगवाद में केवल ~~जहाँ~~ व्यक्ति को महत्व दिया जा रहा था और यह कविता समाज से कटी हुई प्रतीत हो रही थी।

ऐसे में इस कविता आंदोलन के विरुद्ध प्रपद्यवाद का प्रारंभ हुआ, जिसमें समाज को महत्व दिया गया और सामाजिक समस्याओं को केंद्र बिंदु मानकर रचनाएँ की गई। ~~समाज~~ व्यक्ति को समाज का अंग माना गया। इसके प्रमुख रचनाकार

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

नरेश कुमार, केशरी कुमार, नलिन विलोचन है।

अतः हम कह सकते हैं कि प्रपद्यवाद समाज केंद्रित आंदोलन था।

गद्यांश अपेक्षित

मांडल उत्तर देखें

2/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) तारसप्तक

प्रगतिवाद के विरुद्ध प्रयोगवाद के आगमन को प्रदर्शित करने के लिए अज्ञेय ने तारसप्तक प्रकाशित किए। अज्ञेय ने कुछ चार तारसप्तक प्रकाशित किए।

पहला 1991 में, इसी के साथ प्रयोगवाद का आगमन माना जाता है। उन्होंने प्रगतिवादी विचारधारा की जटिलता को खारिज करते हुए 'प्रयोग' पर बल दिया और इसी के साथ प्रयोगवाद आरंभ हुआ।

1943 ई

दूसरा सप्तक 1951 में प्रकाशित किया। इसी के साथ नई कविता आंदोलन का प्रारंभ माना जाता है। जिसमें कवियों की अनुभूति की प्रेरणा से लेखन पर बल दिया।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

तारसप्तक अज्ञेय का नवीन प्रयोग माना जाता है। अज्ञेय के तारसप्तक का हिंदी साहित्य में महत्वपूर्ण योगदान है।

1943 ई. के प्रकाशित तारसप्तक को वर्णित करें

विस्तृत उत्तर देते

2/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) पंत के पल्लव की भूमिका का महत्त्व

पंत ने 'पल्लव' की भूमिका में अपने साहित्य संबंधी दृष्टिकोण का प्रतिपादन किया है। इन्होंने छायावाद के संबंध अपने दृष्टिकोण को भी स्थापित किया और काव्य के लिए आवश्यक विशेषताओं का भी वर्णन किया है। जैसे -

- इन्होंने काव्य भाषा के रूप में ब्रज के स्थान पर 'खड़ी बोली' को स्थापित करने पर बल दिया।
- इन्होंने अलंकार के प्रयोग को केवल शोभा बढ़ाने के स्थान पर अभिव्यक्ति का माध्यम भी माना।
- इन्होंने साहित्य में भाषा शिल्प के महत्व को प्रतिपादित किया और बिंब

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

एवं प्रतीकात्मकता को भी महत्व दिया।

वर्तमान हिंदी साहित्य में भी पल्लव की साहित्य के संबंध में निर्धारित कसौटियां मान्य है और वह साहित्यकारों को प्रेरणा दे रही है।

बहुत अच्छा।

6/10

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) साकेत की उर्मिला

मैथिलीशरण गुप्त ने अपने लेखन में इतिहास की ऐसी नारी चरित्रों को महत्व दिया, जिनको इतिहास में पर्याप्त महत्व नहीं दिया गया।

गुप्त जी ने उर्मिला के माध्यम से यह दर्शाया कि राम के साथ लक्ष्मण के जाने के कारण लक्ष्मण का महत्व तो स्पष्ट हो गया, किंतु उर्मिला को उपेक्षित किया। जबकि उर्मिला ने भी चौदह वर्ष तक पति के वियोग में काटे।

गुप्त जी की उर्मिला त्याग की मूर्ति, जो अपने पति ~~के~~ लक्ष्मण के उद्देश्य में बाधा नहीं बनती। वह निरंतर वियोग सहकर भी कभी दुःखी नहीं होती है। बल्कि वह अपने वियोग का उदात्तीकरण कर देती है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

उर्मिला में करुणा, दया जैसे गुण विद्यमान हैं। —

अतः कहा जा सकता है कि गुप्त जी ने उपेक्षित ऐतिहासिक चरित्रों को अपने लेखन के माध्यम से महत्व स्थापित किया।

बहुत अच्छा

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ड़) महादेवी वर्मा की रहस्यानुभूति

महादेवी वर्मा के संपूर्ण काव्य में रहस्यानुभूति प्रतीत होती है। महादेवी वर्मा छायावादी कवियत्री होने के कारण उनके काव्य में आत्माभिव्यक्ति भी अधिक मात्रा में मिलती है और इस अभिव्यक्ति हेतु वह रहस्यवाद का सहारा लेती हैं।

महादेवी वर्मा का रहस्यवाद प्रकृति का रूप लिए हुए है। वह लिखती हैं -

"मेघमय आसमान से संध्या सुन्दरी परी से उतर रही धीरे, धीरे, धीरे।"

~~महादेवी~~ ~~का~~ वह व्यक्ति का प्रकृति के साथ तीव्र जुड़ाव होता है, तो वह उसी में एक दीख जाने की तत्पर होता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

इसी क्रम में उसमे संशय, भय जैसी विशेषताओं का विकास होता है और वह ईश्वर से एक होने को तत्पर हो जाता है। उदाहरण के लिए

"उस विशालता में होगा मेरी लघुसीमा का मेल। देव देखेंगे अमरता खेलेगी, मेरे मिटने का खेल।"

अंतत: रहस्यानुभूति में जीव का ईश्वर से एकात्म हो जाता है।

अत: स्पष्ट है कि वर्मा के संपूर्ण काव्य में रहस्यानुभूति के दर्शन होते हैं।

रहस्यानुभूति लौकिक है। व्यक्तिगत स्वतंत्रता एवं रूढ़िवादी समाज के प्रति खराहट की उपज है।

प्रयास ठीक है और गहराई लाएँ मॉडल उत्तर देखें

5/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

8. (क) मैथिलीशरण गुप्त के विभिन्न काव्य-ग्रंथों का आधार ग्रहण करते हुए उनकी नारी-भावना का उद्घाटन कीजिये। 20

मैथिलीशरण गुप्त पर नवजागरण का प्रभाव था। नवजागरण से प्रभावित होने के कारण गुप्त जी ने भारत ~~का~~ का अतीत, वर्तमान और भविष्य की स्थिति का वर्णन किया है। गुप्त जी ने भारत में विद्यमान समस्याओं का ~~अ~~ वर्णन किया है। ऐसे में गुप्त जी ने 'नारी' को अपने लेखन का केंद्र बिन्दु मानते हुए ~~भारत~~ इतिहास के चरित्रों का आधुनिक दृष्टि से मूल्यांकन किया है।

मैथिलीशरण गुप्त जी का नारी संबंधी दृष्टिकोण साकेत, यशोधरा, द्वापर और भारत भारती जैसी रचनाओं के आधार पर किया जा सकता है।

मैथिलीशरण गुप्त ने ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के ऐसी

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this sp

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

महिला पात्रों को अपने लेखन का केंद्र बिंदु बनाया, लेकिन इतिहासकारों ने विशेष महत्व नहीं दे दिया।

गुप्त जी ने साकेत की 'उर्मिला' के आधार पर नारी के त्याग संबंधी दृष्टिकोण को उजागर किया। उनका मानना था कि लक्ष्मण जब चौदह वर्ष के लिए वनवास गए, तो उर्मिला को कैसी स्थिति का सामना करना पड़ा, इसका वर्णन किया है।

इसी प्रकार उन्होंने 'यशोधरा' में उनकी मनः स्थिति का वर्णन किया है। जब गौतम बुद्ध यशोधरा को बिना बताए निर्वाण प्राप्ति हेतु गृह त्याग दिया। यशोधरा कहती है - "सखी वो हमसे कहकर जाते, क्या वे हमें पंथ बाधा पाते।"

गुप्त जी का नारी संबंधी दृष्टिकोण भारत आरती में भी आया है। गुप्त जी

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this sp

ने भारत भारती में नारी के आदर्श रूप को स्थापित किया है। उनका मानना है कि त्याग, करुणा, दया, ममता, पतिव्रता इत्यादि आदर्श नारी के गुण के हैं।

उपरोक्त विश्लेषण के पश्चात हम कह सकते हैं कि मैथिलीशरण गुप्त ने इतिहास की महिला पात्रों के आधार पर समकालीन महिला स्थिति को प्रश्नों को उठाया। उन्होंने महिला के आदर्श रूप को स्थापित करते हुए, उसकी कुछ विशेषताएँ बताई जैसे करुणा, दया, त्याग इत्यादि। हालांकि वर्तमान में उसकी नारी विषय दृष्टिकोण पर नारी विमर्श के रचनाकार प्रश्नचिन्ह लगाते हैं। किंतु फिर भी उनका नारी विषयक दृष्टिकोण

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

नारी स्वतंत्रता के ही सूचित करता है।

बहुत अच्छा।

11½/20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) हिन्दी यात्रा-साहित्य में राहुल सांकृत्यायन के प्रदेय पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this sp

राहुल सांकृत्यायन हिंदी यात्रा - साहित्य के सर्वश्रेष्ठ साहित्यकार हैं। उन्होंने अपने जीवन में अनेक देशों की यात्रा की और वहाँ की संस्कृतियों को यात्रा साहित्य के रूप में उकेरा।

सांकृत्यायन ने यात्रा को जीवन का महत्वपूर्ण अंग माना है। उन्होंने ~~अपने~~ यात्रा की महत्ता को प्रदर्शित करते हुए 'घुमक्कड़शास्त्र' की रचना की। जिसमें उन्होंने यात्रा के लिए प्रत्येक व्यक्ति को प्रेरित किया है। उन्होंने कहा है कि घूमने से व्यक्ति का मानसिक विकास होता और वह नवीन बातों से परिचित होती है। उसे नवीन संस्कृतियों सीखने का मौका मिलता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

उन्होंने घुमक्कड़ी को जाति, धर्म, राष्ट्र से ऊपर माना है। उनका मानना है कि यात्रा व्यक्ति को जाति, धर्म, राष्ट्र इत्यादि से ऊपर उठकर सोचने को प्रेरित करता है और उसके ज्ञान में निरंतर वृद्धि होती है।

सांकृत्यायन ने अपने यात्रा साहित्य में यात्रा के दौरान परिचय में आए विद्वानों का भी वर्णन किया है। उन्होंने 'प्रवणानंद' जैसे विचारक का वर्णन करते हुए, उनके विचारों को अपने यात्रा साहित्य में साहित्य दिया।

राहुल जी ने अनेक देशों जैसे रूस, ब्रिटेन, तिब्बत इत्यादि देशों की यात्रा की। इन्होंने भारत

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

के भी अनेक क्षेत्रों की यात्रा की। उन्होंने प्रत्येक स्थान की भौगोलिक स्थिति का वर्णन करने के साथ-साथ सांस्कृतिक एवं सामाजिक स्थिति का भी वर्णन किया है। उनके यात्रा वृतांत निम्नलिखित हैं —

- मेरी तिब्बत यात्रा
- मेरी लद्दाख यात्रा
- रूस में पच्चीस साल
- यूरोप में सवा वर्ष

अतः स्पष्ट है कि राहुल सांकृत्यायन का यात्रा साहित्य में अद्वितीय स्थान है।

उनकी भाषा की उल्लेख करें

बहुत अच्छा

8½/15

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) हिन्दी रेखाचित्र के विकास में रामवृक्ष बेनीपुरी के योगदान पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

हिंदी रेखाचित्र परंपरा में रामवृक्ष बेनीपुरी का महत्वपूर्ण स्थान है। बेनीपुरी ने अपने लेखन सामर्थ्य का प्रयोग करते हुए रेखाचित्र परंपरा को हिंदी साहित्य में सर्वोच्च पर पहुँचाया।

सामर्थ्य

उनके मुख्य रेखाचित्र ~~अतीत~~ 'मील के पत्थर' एवं 'गेहूँ और गुलाब' है। इन रेखाचित्रों में बेनीपुरी जी ने अपनी अतीत की स्मृतियों को रेखांकित किया है।

निबंध है

'गेहूँ और गुलाब' में उन्होंने आध्यात्मिक और भौतिकवाद जैसे विरोधी भावों का वर्णन किया है।

से साथ ही 'मील के पत्थर' में भी

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

उन्होंने अपने अतीत के प्रसंगों का वर्णन किया है। 'माटी की मूरतें' में उन्होंने 'रजिया' और 'बलदेव सिंह' इत्यादि के माध्यम से स्मृतियों का वर्णन किया है। उन्होंने स्मृतियों का बड़ा बेबाकी के साथ रोमानियत भरा वर्णन किया है। उन्होंने 'माटी की मूरतें' में अपने अतीत की घटनाओं के प्रति लगाव को रेखांकित किया है।

बेनीपुरी जी की भाषा अत्यंत सरल एवं सरल है। वे अपने यात्रा साहित्य में कल्पनाओं का समावेश करते हैं। उदाहरण के लिए -

"रजिया वह छोटी लड़की, आह ये औरत कहाँ से हो गई।"

अतः स्पष्ट है कि रामवृक्ष बेनीपुरी का ~~भाषा~~ ~~साहित्य~~ रेखाचित्र में महत्वपूर्ण स्थान है।

अच्छा
8
15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation